एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (मई, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

दलहनी फसलों में मूंग का महत्व और खेती तकनीक

*प्रकर्ष सिंह[1], कौशिक बाजपेयी[1] एवं आर्यन प्रताप सिंह[2]
[1]उन्नत कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विद्यालय, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2]कृषि एवं प्राकृतिक विज्ञान संस्थान, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: prakarshsinghrajput@gmail.com

किसान को अपनी आमदनी बढ़ाने एवं लागत कम करने के लिए प्रतिवर्ष प्रत्येक खेत एक मौसम एक दलहनी फसल अवश्य लगायें जिससे भूमि में पोषक तत्वों की बढ़ोतरी एवं भूमि की गुणवत्ता में सुधार होता है। यह प्रोटीन युक्त उत्पादन के साथ-साथ खली तोड़ने के बाद फसलों को भूमि में मिला देने पर यह हरी खाद का भी काम करती है। मूंग गर्मी एवं बरसात दोनों मौसमों की कम से कम समय में तैयार होने वाली एक मुख्य दलहनी फसल है। मूंग को मुक्ता खरीफ में उगाया जाता है और सिंचाई सुविधा ना होने पर भी अच्छा उत्पादन प्राप्त होता है।

मूंग खाने के प्रमुख फायदे

वजन नियंत्रण: मूंग में कैलोरी कम और प्रोटीन-फाइबर की मात्रा अधिक होती है। इसे खाने से लंबे समय तक पेट भरा रहता है, जिससे आप बार-बार खाने से बचते हैं।

मजबूत इम्यूनिटी: मूंग और इसके स्प्राउट्स (अंकुरित) में विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट्स भरपूर होते हैं, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं।

बेहतर पाचन: यह हाई-फाइबर युक्त होती है, जिससे कब्ज, गैस और ब्लोटिंग जैसी समस्याएं दूर होती हैं और पाचन तंत्र मजबूत बनता है।

डायबिटीज में फायदेमंद: मूंग का ग्लाइसेमिक इंडेक्स (Glycemic Index) काफी कम होता है, जो ब्लड शुगर लेवल को अचानक बढ़ने से रोकता है।

दिल की सेहत: इसमें मौजूद पोटेशियम और मैग्नीशियम ब्लड प्रेशर को सामान्य सामान्य रखते हैं और खराब कोलेस्ट्रॉल (LDL) को कम करने में सहायक होते हैं।

भूमि और तैयारी: मूंग को रेतीली से काली कपास वाली सभी प्रकार की मृदाओं में उगाया जा सकता है परंतु इसकी खेती के लिये अच्छे जलनिकास वाली दोमट मृदा सर्वोत्तम होती है। क्षारीय एवं अम्लीय भूमि मूंग की खेती के लिये उपयुक्त नहीं होती है। जायद की फसल के लिये पलेवा देकर खेत की तैयारी करनी चाहिये। 2-3 जुताई देशी हल से करने के बाद पाटा लगाना चाहिये जिससे मृदा भुरभुरी हो जाये और भूमि में नमी संरक्षित रहे।

बोने का समय: ग्रीष्मकालीन मूंग की बुआई का अनुकूल समय 10 मार्च से 10 अप्रैल होता है ग्रीष्मकाल में मूंग की खेती करने से अधिक तापमान तथा कम आद्रता के कारण बीमारियों तथा कीटों का प्रकोप कम होता है। परंतु इससे देरी से बुआई करने पर गर्म हवा तथा वर्षा के कारण फल्लियों को नुकसान होता हैं। अप्रैल में शीघ्र पकने वाली प्रजातियों को लगाना उत्तम होता है।

मूंग की प्रमुख उन्नत किस्में

गर्मी/ग्रीष्मकालीन उन्नत किस्मे

पूसा रत्न : 65-70 दिन में पकती है, पीला मोजेक वायरस प्रतिरोधी।

PDM-139 (सम्राट): 60-65 दिन में तैयार, 8-10 क्विंटल/एकड़ तक की पैदावार।

पूसा 1431: जल्दी पकने वाली (60-65 दिन) और चमकदार दाने।

GM-5: गर्मी और खरीफ दोनों के लिए उपयुक्त, 18-19 क्विंटल/हैक्टेयर उपज।

खरीफ/वर्षाकालीन उन्नत किस्में :

MH-1142: उन्नत, उच्च उपज और रोग-प्रतिरोधी (CCSHAU द्वारा विकसित)।

पंत मूंग-1: 70 दिन में तैयार, अधिक मुनाफा देने वाली।

SSL 1827: पीला चितकबरा रोग प्रतिरोधी, 5 क्विंटल/एकड़ औसत पैदावार।

नोट: किस्म का चयन अपने क्षेत्र की जलवायु और मिट्टी के अनुसार करें।

मूंग का बीज दर बुवाई की विधि और मौसम पर निर्भर करता है

मूंग का बीज दर

1. खरीफ मूंग (लाइन में बुवाई)

12–15 किग्रा/हेक्टेयर

2. खरीफ मूंग (छिटकवां बुवाई)

18–20 किग्रा/हेक्टेयर

3. ग्रीष्मकालीन मूंग

20–25 किग्रा/हेक्टेयर

मूंग की अच्छी पैदावार के लिए सही दूरी का पालन करना बहुत महत्वपूर्ण है:

कतारों के बीच की दूरी 45 से. मी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेन्टीमीटर उचित होती है।

बीज उपचार

बुवाई से पहले बीज को :

राइजोबियम कल्चर तथा

फफूंदनाशी (जैसे कार्बेन्डाजिम) से उपचारित करना लाभकारी होता है।

जैविक तरीका: यदि जैविक खेती कर रहे हैं, तो ट्राइकोडर्मा विरिडे (*Trichoderma viride*) 4-5 ग्राम प्रति किलो बीज का उपयोग करें।

खाद एवं उर्वरक : मूंग एक दलहनी फसल है, इसलिए इसे अन्य फसलों की तुलना में कम नाइट्रोजन की आवश्यकता होती है। फिर भी अच्छी पैदावार के लिए संतुलित खाद देना जरूरी है।

1. **गोबर की खाद (FYM)**

खेत की अंतिम जुताई के समय

5–10 टन सड़ी हुई गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर डालें।

2. रासायनिक उर्वरक

प्रति हेक्टेयर अनुशंसित मात्रा

नाइट्रोजन (N) ⟶ 15–20 किग्रा

फास्फोरस (P_2O_5) ⟶ 40–50 किग्रा

पोटाश (K_2O) ⟶ 20 किग्रा (यदि मिट्टी में कमी हो)

3. उर्वरक कैसे दें

बुवाई के समय ही खाद को कतारों में बीज से थोड़ा नीचे डालना अच्छा रहता है।

सामान्य उर्वरक मात्रा

यूरिया ⟶ 35–45 किग्रा/हेक्टेयर

डीएपी ⟶ 100–125 किग्रा/हेक्टेयर

यदि डीएपी दे रहे हैं तो अलग से अधिक यूरिया की आवश्यकता कम पड़ती है।

4. जैव उर्वरक

बीज उपचार करना लाभदायक रहता है|

Rhizobium Culture

PSB Culture

इनसे नाइट्रोजन स्थिरीकरण बढ़ता है और उत्पादन अच्छा मिलता है।

सिंचाई प्रबंधन

मूंग की खेती में ज्यादा सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। सामान्यतः 3 से 4 सिंचाई पर्याप्त रहती है। लेकिन फूल और दाना बनने की अवस्था में खेत में नमी बनाए रखना बहुत जरूरी होता है

बुवाई से पहले (पलेवा): बुवाई के समय खेत में नमी न हो, तो हल्की सिंचाई (पलेवा) करें, इससे अंकुरण अच्छा होता है और खरपतवार भी कम होते हैं।

पहली सिंचाई: बुवाई के 20 से 25 दिन बाद (जब पौधे में फूल आने की शुरुआती अवस्था हो) पहली सिंचाई करनी चाहिए।
दूसरी सिंचाई: फूल आने की मुख्य अवस्था में (लगभग 35-40 दिन बाद)।
तीसरी सिंचाई: फली बनते समय (Pod Formation Stage) - यह सबसे नाजुक समय होता है।
चौथी सिंचाई (यदि आवश्यक हो): दानों की भरपाई/पकने के समय (55 दिन बाद)।

मूंग के प्रमुख कीट एवं रोकथाम

माहू – एनएसकेई 5 प्रतिशत (50 ग्राम/लीटर) या डाइमेथोएट 30 ईसी (2.0 मि.ली./लीटर) या इमिडाक्लोप्रीड 17.8 एस.एल. (0.35 मिली प्रति लीटर) का फसल पर छिड़काव करें।

बिहार रोयेंदार सूँड़ी : यह कीट प्राय: झुंड में पौधों पर मिलता है। ऐसे पौधों को उखाड़कर झिल्ली (पोलीथीन) में बन्द करके नष्ट कर दें।

क्वीनालफॉस 25 ईसी (1.25 ग्राम प्रति लीटर पानी) से छिडकाव कर दें।

हरा फुदका या जैसिड

बुवाई की तिथि में परिवर्तन करके इस कीट के प्रकोप को कम किया जा सकता है। कीटनाशी जैसे डाइमेथोएट 30 ईसी का (2 मि.ली./लीटर पानी) का छिड़काव लाभदायक पाया गया है।

ब्लिस्टर बीटल

ऐसफेट 75 एस.पी. 1.0 ग्राम/लीटर या मेथोमाइल 40 एसपी 1-1.5 ग्राम/लीटर या क्यूनॉलफॉस 25 ईसी 2.0 मि.ली./लीटर की दर से फसल पर छिड़काव करें।

चित्तीदार सूँडी (मरूका विट्राटा)

गर्मी में खेत की गहरी जुताई करें तथा कीड़े की सुषुप्ता अवस्था (प्यूपा) को नष्ट कर दें। खेत में प्रकाश प्रपंच/12ञ्च लगायें जिससे प्रौढ़ नाशीजीव आकर्षित हो तथा उनको नष्ट करें।नवजात सूडियाँ सामूहिक अवस्था में पायी जाती है। अत: इन्हें नष्ट कर जला देंयदि इनका प्रकोप अधिक हो तो नीम आधारित एमामेक्टीन बेन्जोएट 5 एसजी /0.5 ग्रा./ली. अथवा इण्डोक्सोकार्व 14.5 एससी/ 0.8 मिली प्रति लीटर अथवा स्पीनोसैड 45 एस.सी. / 0.3 मिली/ली. पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।

मूंग के प्रमुख रोग और उनके लक्षण

पीला मोज़ेक वायरस (Yellow Mosaic Virus): पत्तियां पीली पड़ जाती हैं और बाद में सूखकर गिर जाती हैं। यह सफेद मक्खी द्वारा फैलता है।

जड़ गलन (Root Rot): पौधे अचानक मुरझा जाते हैं और जड़ें गलने लगती हैं।

पाउडरी मिल्ड्यू (Powdery Mildew): पत्तियों और तनों पर सफेद पाउडर जैसा जमा हो जाता है।

रोग नियंत्रण के उपाय

बीज उपचार: बुवाई से पहले बीजों को कार्बेन्डाजिम (Carbendazim) या ट्राइकोडर्मा विरडी (Trichoderma viride) (4 ग्राम प्रति किलो बीज) से उपचारित करें।

सफेद मक्खी नियंत्रण: चूँकि पीला मोज़ेक सफेद मक्खी से फैलता है, इसलिए इमिडाक्लोप्रिड (Imidacloprid) या डायफेन्थियुरॉन का छिड़काव करें।

फफूंदनाशक का प्रयोग: पाउडरी मिल्ड्यू के लिए घुलनशील सल्फर का छिड़काव करें।

स्वच्छ खेती: रोगग्रस्त पौधों को खेत से निकालकर नष्ट कर दें।

एन्थ्रेक्नोज (Anthracnose): तनों, पत्तियों और फलियों पर गहरे रंग के धब्बे या घाव बन जाते हैं।

सरकोस्पोरा पत्ती धब्बा : पत्तियों पर छोटे, गोल बैंगनी-लाल या भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं।

लीफ क्रिंकल (Leaf Crinkle): पत्तियों में झुर्रियां पड़ जाती हैं और वे मुड़ जाती हैमूंग के प्रमुख रोग और उनके लक्षण

पीला मोज़ेक वायरस (Yellow Mosaic Virus): पत्तियां पीली पड़ जाती हैं और बाद में सूखकर गिर जाती हैं। यह सफेद मक्खी द्वारा फैलता है।

जड़ गलन (Root Rot): पौधे अचानक मुरझा जाते हैं और जड़ें गलने लगती हैं।

पाउडरी मिल्ड्यू (Powdery Mildew): पत्तियों और तनों पर सफेद पाउडर जैसा जमा हो जाता है।

एन्थ्रेक्नोज (Anthracnose): तनों, पत्तियों और फलियों पर गहरे रंग के धब्बे या घाव बन जाते हैं।

सरकोस्पोरा पत्ती धब्बा : पत्तियों पर छोटे, गोल बैंगनी-लाल या भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं।

लीफ क्रिंकल (Leaf Crinkle): पत्तियों में झुर्रियां पड़ जाती हैं और वे मुड़ जाती हैं।

मूंग की उपज: मूंग की उपज प्रति हेक्टेयर सामान्यतः 8–12 क्विंटल होती है। अच्छी सिंचाई, उन्नत किस्म, संतुलित उर्वरक तथा उचित कीट नियंत्रण करने पर 15–18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

मूंग की खेती से आर्थिक लाभ लगभग इस प्रकार हो सकता है (प्रति हेक्टेयर)

लागत: लगभग ₹23,000–40,000

उत्पादन: 10–15 क्विंटल

बिक्री मूल्य: लगभग ₹6,000–8,000 प्रति क्विंटल (बाजार के अनुसार)

कुल आय: लगभग ₹70,000–1,20,000

शुद्ध लाभ: लगभग ₹40,000–80,000 प्रति हेक्टेयर।